

संत कबीर के काव्य में मूल्य-शिक्षा: समकालीन परिप्रेक्ष्य

लव चावड़ीकर

कार्यकारी प्रबंधक,

आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भोपाल मध्य प्रदेश

शोध सार

भारतीय ज्ञान-परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि मनुष्य के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास रहा है। इसी कारण भारतीय चिंतन में मूल्य-शिक्षा को शिक्षा का प्राणतत्त्व माना गया है। वर्तमान समय में विज्ञान, तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण ने जीवन को सुविधाजनक तो बनाया है, किन्तु इसके साथ नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, सहिष्णुता, संवेदनशीलता तथा मानवीय संबंधों के समक्ष गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। ऐसे समय में संत साहित्य, विशेषकर संत कबीर दास का काव्य, मूल्य-शिक्षा का अत्यंत प्रभावी स्रोत सिद्ध होता है।

कबीर ने अपने काव्य में सत्य, प्रेम, समता, करुणा, श्रम, आत्मानुशासन, गुरु-परंपरा, धार्मिक सहिष्णुता तथा सामाजिक न्याय जैसे सार्वकालिक मूल्यों को सहज एवं लोक बोधगम्य भाषा में अभिव्यक्त किया है। उनका उद्देश्य किसी संप्रदाय का विस्तार नहीं, बल्कि मनुष्य के भीतर निहित नैतिक चेतना का जागरण था। उनके दोहे और साखियाँ व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण, विवेक, आडंबर-विरोध तथा मानव-मात्र के प्रति समान दृष्टि विकसित करने की प्रेरणा देते हैं।

यह आलेख कबीर के काव्य में निहित मूल्य-शिक्षा के विभिन्न आयामों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि आज के सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक परिवेश में उनके विचार किस प्रकार प्रासंगिक हैं तथा शिक्षा व्यवस्था में मूल्य-आधारित दृष्टिकोण के विकास में उनकी शिक्षाओं का किस प्रकार उपयोग किया जा सकता है।

बीज शब्द: कबीर, मूल्य-शिक्षा, नैतिकता, मानवता, समता, प्रेम, गुरु, सामाजिक चेतना, संत साहित्य।

प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के चरित्र, व्यवहार, संवेदनशीलता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास भी रहा है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय में ज्ञान को तभी सार्थक माना गया है जब वह जीवन में सदाचार, करुणा, सत्यनिष्ठा और लोकमंगल की भावना उत्पन्न करे। आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था ने ज्ञान और कौशल के अनेक नए आयाम विकसित किए हैं, परन्तु यह भी सत्य है कि नैतिक मूल्यों के क्षरण ने सामाजिक जीवन को अनेक प्रकार की समस्याओं से घेर लिया है। हिंसा, असहिष्णुता, उपभोक्तावाद,

सामाजिक विभाजन, भ्रष्टाचार तथा मानवीय संवेदनाओं में कमी जैसी परिस्थितियाँ मूल्य-शिक्षा की आवश्यकता को और अधिक महत्वपूर्ण बनाती हैं।

ऐसे समय में भारतीय संत साहित्य समाज को नई दिशा प्रदान करने की क्षमता रखता है। संत परंपरा ने धर्म को कर्मकाण्डों से मुक्त कर मानव-कल्याण का माध्यम बनाया। इस परंपरा के प्रमुख प्रतिनिधि संत कबीर दास हैं, जिनकी वाणी आज भी उतनी ही प्रासंगिक प्रतीत होती है जितनी पंद्रहवीं शताब्दी में थी। कबीर ने अपने समय के धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अंतर्विरोधों को निकट से देखा तथा निर्भीकता के साथ उनका प्रतिरोध किया। उन्होंने किसी वर्ग, जाति अथवा धर्म का पक्ष लेकर नहीं, बल्कि मनुष्य की गरिमा और समानता के आधार पर समाज का मूल्यांकन किया।

कबीर का साहित्य किसी दार्शनिक ग्रंथ की तरह जटिल नहीं है। उनकी भाषा लोकभाषा है और उनके विचार जीवन के प्रत्यक्ष अनुभवों से उपजे हैं। यही कारण है कि उनका काव्य शिक्षित और अशिक्षित दोनों वर्गों के लिए समान रूप से ग्राह्य है। उनके दोहों में जीवन-दर्शन, नैतिक अनुशासन और व्यवहारिक बुद्धि का अद्भुत समन्वय मिलता है। वे बार-बार इस बात पर बल देते हैं कि बाहरी आडंबर से अधिक महत्वपूर्ण मनुष्य का आचरण है। उनके लिए धर्म का अर्थ मानवता है, पूजा का अर्थ सेवा है और ज्ञान का अर्थ आत्मबोध है।

मूल्य-शिक्षा का उद्देश्य भी यही है कि व्यक्ति केवल सूचना-संपन्न न बने, बल्कि विवेकशील, उत्तरदायी और संवेदनशील नागरिक के रूप में विकसित हो। इस दृष्टि से कबीर का काव्य विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा सामाजिक जीवन में मूल्य-आधारित शिक्षा का प्रभावी आधार बन सकता है।

मूल्य-शिक्षा : अवधारणा एवं स्वरूप

'मूल्य' शब्द का सामान्य अर्थ है—वह आदर्श या मानदंड जिसके आधार पर व्यक्ति अपने व्यवहार और निर्णयों का निर्धारण करता है। शिक्षा के संदर्भ में मूल्य वे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक गुण हैं जो व्यक्ति को स्वयं के साथ-साथ समाज के प्रति भी उत्तरदायी बनाते हैं। मूल्य-शिक्षा का उद्देश्य केवल नैतिक उपदेश देना नहीं, बल्कि ऐसे जीवन-दृष्टिकोण का विकास करना है जिसके माध्यम से व्यक्ति सत्य, न्याय, करुणा, समानता, सहयोग, सहिष्णुता और मानव गरिमा जैसे मूल्यों को व्यवहार में उतार सके।

भारतीय परंपरा में मूल्य-शिक्षा का आधार 'सा विद्या या विमुक्तये' की अवधारणा रही है। अर्थात् शिक्षा वह है जो मनुष्य को अज्ञान, अहंकार, संकीर्णता और अन्याय से मुक्त करे। आधुनिक शिक्षा-दर्शन में भी मूल्य-शिक्षा को व्यक्तित्व-निर्माण का अनिवार्य अंग माना गया है। यूनेस्को द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के चार स्तंभ—**जानना (Learning to Know), करना (Learning to Do), साथ रहना (Learning to Live Together) तथा स्वयं बनना (Learning to Be)**—वास्तव में मूल्य-आधारित शिक्षा के ही विस्तार हैं।

भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) भी नैतिकता, संवेदनशीलता, संवैधानिक मूल्यों, सहानुभूति, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व को शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में सम्मिलित करती है। इससे स्पष्ट होता है कि मूल्य-शिक्षा आज केवल दार्शनिक विमर्श का विषय नहीं, बल्कि शैक्षिक आवश्यकता बन चुकी है।

कबीर के काव्य का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यही है कि उसमें मूल्य किसी उपदेशात्मक शैली में नहीं आते, बल्कि जीवनानुभव के रूप में व्यक्त होते हैं। वे व्यक्ति को आदेश नहीं देते; वे उसे सोचने, स्वयं को परखने और अपने आचरण को सुधारने के लिए प्रेरित करते हैं। यही कारण है कि उनका साहित्य आज भी मूल्य-शिक्षा के प्रभावी साधनों में गिना जाता है।

संत कबीर दास : व्यक्तित्व और काव्य-दृष्टि

संत कबीर दास भारतीय संत परंपरा के उन विरल व्यक्तित्वों में हैं जिन्होंने सामाजिक चेतना, धार्मिक उदारता और नैतिक साहस का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। सामान्यतः उनका जीवनकाल पंद्रहवीं शताब्दी माना जाता है। उनका अधिकांश जीवन काशी में व्यतीत हुआ और उन्होंने जुलाहा समुदाय में रहते हुए श्रम, आत्मनिर्भरता तथा लोकजीवन के अनुभवों को अपनी वाणी का आधार बनाया।

कबीर की दृष्टि किसी एक धार्मिक परंपरा तक सीमित नहीं थी। उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों समाजों में व्याप्त रूढ़ियों, अंधविश्वासों और कर्मकाण्डों की समान रूप से आलोचना की। उनका विरोध धर्म से नहीं, बल्कि धर्म के नाम पर होने वाले विभाजन, शोषण और बाह्याचार से था। वे मनुष्य की भीतरी शुचिता को बाहरी अनुष्ठानों से अधिक महत्वपूर्ण मानते थे।

उनकी काव्य-दृष्टि अनुभव, विवेक और नैतिक साहस पर आधारित है। वे जीवन के प्रत्येक पक्ष को तर्क और व्यवहार की कसौटी पर परखते हैं। उनका मानना है कि वास्तविक ज्ञान वही है जो व्यक्ति को विनम्र, न्यायप्रिय और मानवीय बनाए। इसलिए उनके दोहे केवल आध्यात्मिक संदेश नहीं देते, बल्कि सामाजिक सुधार, नैतिक जागरण और मानवीय एकता का भी आह्वान करते हैं।

यही विशेषता कबीर को मूल्य-शिक्षा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्रोत बनाती है। उनके काव्य में व्यक्त मूल्य किसी विशेष युग तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक हैं। इन्हीं मूल्यों का विस्तृत विवेचन अगले भाग में प्रस्तुत किया जाएगा।

संत कबीर दास के काव्य में मूल्य-शिक्षा के प्रमुख आयाम

1. सत्य का मूल्य : नैतिक जीवन का आधार

कबीर के काव्य में सत्य केवल नैतिक उपदेश नहीं, बल्कि जीवन का सर्वोच्च मूल्य है। उनके अनुसार सत्य का पालन करने वाला व्यक्ति बाहरी सम्मान की अपेक्षा आत्मिक शांति प्राप्त करता है। सत्य मनुष्य को निर्भीक बनाता

है और उसके चरित्र को दृढ़ता प्रदान करता है। कबीर ने अपने समय की सामाजिक और धार्मिक विसंगतियों की आलोचना करते हुए कभी सत्य का साथ नहीं छोड़ा। इसी कारण उनका व्यक्तित्व एक निर्भीक समाज-सुधारक के रूप में स्थापित हुआ।

उनका प्रसिद्ध दोहा—

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हृदय साँच है, ताके हृदय आप॥"

इस दोहे में स्पष्ट किया गया है कि सत्य का आचरण किसी भी तपस्या से श्रेष्ठ है। मूल्य-शिक्षा की दृष्टि से यह विचार विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, ईमानदारी तथा उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का आधार प्रदान करता है। आज जब व्यक्तिगत लाभ के लिए असत्य का सहारा लेना सामान्य होता जा रहा है, तब कबीर का सत्य-दर्शन अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है।

2. मानवता और समता का मूल्य

कबीर ने जाति, वर्ण, धर्म और सामाजिक ऊँच-नीच के आधार पर मनुष्य के विभाजन का स्पष्ट विरोध किया। उनके लिए प्रत्येक मनुष्य समान सम्मान का अधिकारी है। उनका मानना था कि किसी व्यक्ति का मूल्य उसकी जाति से नहीं, बल्कि उसके ज्ञान, चरित्र और कर्म से निर्धारित होता है।

"जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।

मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान॥"

यह दोहा सामाजिक समानता और मानवीय गरिमा का प्रभावशाली संदेश देता है। आधुनिक लोकतांत्रिक समाज भी समान अवसर, सामाजिक न्याय तथा मानवाधिकारों के सिद्धांतों पर आधारित है। इसलिए कबीर का समतावादी दृष्टिकोण मूल्य-शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार बन सकता है।

विद्यालयी शिक्षा में यदि विद्यार्थियों को जातीय, धार्मिक अथवा आर्थिक भेदभाव से ऊपर उठकर सहयोग, सह-अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान का अभ्यास कराया जाए, तो कबीर के इस मूल्य की सार्थकता व्यावहारिक रूप में दिखाई दे सकती है।

3. प्रेम और करुणा : मानवीय संबंधों का आधार

कबीर के अनुसार प्रेम समस्त मानवीय संबंधों की आत्मा है। वे विद्वत्ता की अपेक्षा प्रेम को अधिक महत्व देते हैं। उनका प्रसिद्ध दोहा—

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।

ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय॥"

यहाँ 'प्रेम' का अर्थ केवल भावनात्मक संबंध नहीं, बल्कि समस्त जीवों के प्रति करुणा, संवेदना और सहानुभूति है। कबीर मानते हैं कि ज्ञान तभी सार्थक है जब वह मनुष्य के व्यवहार को अधिक मानवीय बनाए।

आज के प्रतिस्पर्धी वातावरण में संवेदनशीलता और सामाजिक सहयोग का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। मूल्य-शिक्षा का उद्देश्य भी विद्यार्थियों में सहयोग, सहानुभूति, सेवा तथा परस्पर सम्मान की भावना विकसित करना है। इस दृष्टि से कबीर का प्रेम-दर्शन शिक्षा के मानवीय पक्ष को सुदृढ़ करता है।

4. गुरु का महत्व : ज्ञान और चरित्र-निर्माण

भारतीय परंपरा में गुरु को ज्ञान का मार्गदर्शक माना गया है। कबीर ने गुरु को केवल शास्त्रीय ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं, बल्कि आत्मबोध कराने वाला पथप्रदर्शक माना है।

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।

बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥"

इस दोहे का आशय यह है कि गुरु मनुष्य को सत्य का मार्ग दिखाता है और उसके भीतर विवेक का विकास करता है। मूल्य-शिक्षा में शिक्षक की भूमिका केवल पाठ्यक्रम पूर्ण करने तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और चरित्र-निर्माण का भी प्रमुख माध्यम होता है।

आज जब शिक्षा का अत्यधिक व्यवसायीकरण हो रहा है, तब कबीर का गुरु-दर्शन शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के लिए प्रेरणादायी है।

5. श्रम, आत्मनिर्भरता और कर्मशीलता

कबीर स्वयं श्रमिक जीवन से जुड़े थे। उन्होंने कभी श्रम को हीन नहीं माना, बल्कि ईमानदार श्रम को जीवन की गरिमा से जोड़ा। उनका संपूर्ण जीवन इस बात का उदाहरण है कि आध्यात्मिक चेतना और कर्मशीलता एक-दूसरे के पूरक हैं।

कबीर का संदेश है कि परिश्रम से अर्जित जीवन ही वास्तविक सम्मान देता है। आधुनिक मूल्य-शिक्षा भी श्रम की गरिमा (Dignity of Labour) को आवश्यक मानती है। यदि विद्यार्थी श्रम के महत्व को समझेंगे तो उनमें आत्मनिर्भरता, अनुशासन और उत्तरदायित्व जैसे गुण स्वतः विकसित होंगे।

6. अहंकार-त्याग और विनम्रता

कबीर के अनुसार अहंकार मनुष्य के नैतिक विकास में सबसे बड़ी बाधा है। ज्ञान, धन, पद अथवा शक्ति का अभिमान व्यक्ति को सत्य से दूर ले जाता है। इसलिए वे विनम्रता को श्रेष्ठ गुण मानते हैं।

उनका प्रसिद्ध दोहा—

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।

पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर॥"

इस दोहे में स्पष्ट किया गया है कि केवल बड़ा होना पर्याप्त नहीं है; व्यक्ति तभी महान है जब उसका जीवन दूसरों के लिए उपयोगी हो। मूल्य-शिक्षा में सेवा-भाव, सहयोग तथा विनम्रता जैसे गुणों का विकास इसी दृष्टिकोण से किया जाता है।

7. आत्मनिरीक्षण और आत्म-सुधार

कबीर दूसरों की आलोचना करने की अपेक्षा स्वयं को सुधारने पर अधिक बल देते हैं।

"बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोया।

जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोया॥"

यह दोहा आत्मचिंतन की उत्कृष्ट शिक्षा देता है। व्यक्ति जब अपनी कमियों को पहचानता है तभी उसका नैतिक विकास संभव होता है। आधुनिक मनोविज्ञान भी आत्ममूल्यांकन (Self-reflection) को व्यक्तित्व-विकास का महत्वपूर्ण साधन मानता है।

विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में यदि आत्मविश्लेषण की प्रवृत्ति विकसित की जाए तो विद्यार्थियों में उत्तरदायित्व और आत्मानुशासन का विकास अधिक प्रभावी ढंग से हो सकता है।

8. समय का मूल्य और कर्म की तत्परता

कबीर समय के महत्व को भली-भाँति समझते थे। वे आलस्य और टालमटोल को जीवन की उन्नति में बाधक मानते हैं।

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।

पल में प्रलय होगी, बहुरि करेगा कब॥"

यद्यपि इस दोहे की प्रामाणिकता पर कुछ विद्वानों में मतभेद मिलता है, फिर भी यह व्यापक रूप से कबीर की लोकपरंपरा से जुड़ा हुआ माना जाता है और समय के सदुपयोग का प्रभावी संदेश देता है।

समय-प्रबंधन, कार्यनिष्ठा और अनुशासन आधुनिक शिक्षा के भी आवश्यक मूल्य हैं। कबीर का यह संदेश विद्यार्थियों तथा युवाओं के लिए विशेष रूप से प्रेरक है।

9. धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक सद्भाव

कबीर ने धार्मिक आडंबरों और संकीर्णताओं का विरोध करते हुए मानवता को सर्वोच्च धर्म माना। उन्होंने मंदिर और मस्जिद की बहस से ऊपर उठकर मनुष्य के अंतःकरण की पवित्रता पर बल दिया।

उनका प्रसिद्ध कथन—

"मोको कहाँ ढूँढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।"

यह संदेश स्पष्ट करता है कि ईश्वर बाहरी प्रदर्शन में नहीं, बल्कि शुद्ध आचरण, प्रेम और सत्यनिष्ठ जीवन में विद्यमान है। वर्तमान समय में सामाजिक सौहार्द, सांप्रदायिक सद्भाव और संवैधानिक मूल्यों की स्थापना के लिए कबीर की यह दृष्टि अत्यंत उपयोगी है।

10. मूल्य-शिक्षा और समकालीन शिक्षण प्रक्रिया

कबीर के काव्य का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष इसकी व्यवहारिकता है। उनके विचार केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि जीवन में अपनाने के लिए हैं। विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में मूल्य-शिक्षा के अंतर्गत कबीर के दोहों का विश्लेषण, समूह-चर्चा, नाट्य-प्रस्तुति, सामुदायिक सेवा तथा जीवन-कौशल आधारित गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक चेतना विकसित की जा सकती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी अनुभवात्मक शिक्षा, नैतिक मूल्यों, संवैधानिक दायित्वों, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा भारतीय ज्ञान-परंपरा को शिक्षा का अभिन्न अंग मानती है। इस संदर्भ में कबीर का साहित्य केवल साहित्यिक अध्ययन का विषय नहीं, बल्कि मूल्य-आधारित शिक्षण का प्रभावी साधन बन सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि कबीर के काव्य में निहित सत्य, समता, प्रेम, श्रम, विनम्रता, आत्मनिरीक्षण तथा मानवता जैसे मूल्य आज भी व्यक्ति और समाज दोनों के लिए समान रूप से प्रासंगिक हैं। इन मूल्यों का समावेश शिक्षा-प्रक्रिया को अधिक मानवीय, उत्तरदायी और जीवनोपयोगी बना सकता है।

समकालीन परिप्रेक्ष्य में कबीर की मूल्य-शिक्षा की प्रासंगिकता

इक्कीसवीं शताब्दी में मानव समाज अभूतपूर्व वैज्ञानिक और तकनीकी उपलब्धियों के दौर से गुजर रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल संचार, वैश्वीकरण तथा तीव्र आर्थिक विकास ने जीवन को अनेक सुविधाएँ प्रदान की हैं। दूसरी ओर, सामाजिक असमानता, नैतिक संकट, मानसिक तनाव, सांप्रदायिक वैमनस्य, पर्यावरणीय चुनौतियाँ तथा उपभोक्तावादी जीवन-दृष्टि ने मानवीय मूल्यों के सामने गंभीर प्रश्न खड़े किए हैं। ऐसी परिस्थितियों में शिक्षा की भूमिका केवल ज्ञान और कौशल प्रदान करने तक सीमित नहीं रह सकती; उसे ऐसे नागरिक तैयार करने होंगे जो नैतिक, संवेदनशील, उत्तरदायी और लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हों।

यही संत कबीर का काव्य नई ऊर्जा और नई दिशा प्रदान करता है। कबीर ने मनुष्य को उसकी जाति, धर्म, भाषा अथवा सामाजिक स्थिति के आधार पर नहीं, बल्कि उसके आचरण और मानवीय गुणों के आधार पर परखा। उनका यह दृष्टिकोण भारतीय संविधान में निहित समानता, बंधुत्व और न्याय जैसे मूल्यों के साथ गहरा सामंजस्य रखता है।

आज शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन (Critical Thinking), नैतिक निर्णय क्षमता (Ethical Decision Making), सहयोगात्मक व्यवहार (Collaborative Behaviour) तथा सामाजिक उत्तरदायित्व (Social Responsibility) का विकास करना है। कबीर के दोहे इन सभी पक्षों को सहज और प्रभावशाली रूप में

प्रस्तुत करते हैं। वे अंधानुकरण का विरोध करते हैं, प्रश्न पूछने का साहस देते हैं और व्यक्ति को स्वयं सत्य की खोज के लिए प्रेरित करते हैं। यही वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा विवेकपूर्ण चिंतन की आधारशिला है।

डिजिटल युग में सूचनाओं की अधिकता के बावजूद सत्य की पहचान कठिन होती जा रही है। अफवाहें, भ्रामक सूचनाएँ और सामाजिक माध्यमों पर फैलने वाली असत्य सामग्री समाज में भ्रम और विभाजन उत्पन्न करती है। ऐसी स्थिति में कबीर की सत्यनिष्ठा, विवेक और आत्मपरीक्षण की शिक्षा नागरिकों को अधिक जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार की प्रेरणा देती है।

इसी प्रकार बढ़ती सामाजिक प्रतिस्पर्धा ने व्यक्तिवाद और आत्मकेंद्रित जीवन-दृष्टि को प्रोत्साहित किया है। परिणामस्वरूप सहयोग, सहानुभूति और सामुदायिक जीवन के मूल्य कमजोर पड़ते दिखाई देते हैं। कबीर का प्रेम-दर्शन इन चुनौतियों का मानवीय समाधान प्रस्तुत करता है। उनका प्रेम किसी सीमित संबंध का नहीं, बल्कि समस्त मानव समाज के प्रति करुणा, सम्मान और संवेदनशीलता का प्रतीक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय ज्ञान-परंपरा, नैतिक मूल्यों, संवैधानिक कर्तव्यों, पर्यावरणीय चेतना तथा अनुभवात्मक शिक्षा को विशेष महत्व देती है। इस संदर्भ में कबीर का साहित्य विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में केवल साहित्यिक अध्ययन तक सीमित न रहकर मूल्य-आधारित शिक्षण का प्रभावी माध्यम बन सकता है। विद्यार्थियों को कबीर के दोहों का केवल अर्थ बताना पर्याप्त नहीं होगा; उनके सामाजिक संदर्भ, नैतिक संदेश तथा वर्तमान जीवन में उनके व्यवहारिक अनुप्रयोग पर भी चर्चा आवश्यक है।

मूल्य-शिक्षा के क्षेत्र में कबीर की शिक्षाओं का व्यावहारिक उपयोग

कबीर की शिक्षाओं को आधुनिक शिक्षण प्रक्रिया से निम्न प्रकार जोड़ा जा सकता है—

1. कक्षा-शिक्षण में कबीर के दोहों का मूल्यपरक विश्लेषण।
2. नैतिक दुविधाओं (Ethical Dilemmas) पर समूह-चर्चा।
3. सामुदायिक सेवा कार्यक्रमों के साथ कबीर के मानवतावादी विचारों का समन्वय।
4. शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय संत परंपरा के मूल्य-दर्शन का समावेश।
5. विद्यालयी प्रार्थना, साहित्यिक गतिविधियों तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में कबीर की वाणी का रचनात्मक उपयोग।
6. डिजिटल नागरिकता (Digital Citizenship) और मीडिया साक्षरता के संदर्भ में सत्य एवं विवेक पर आधारित चर्चाएँ।

इन उपायों के माध्यम से मूल्य-शिक्षा केवल सैद्धांतिक विषय न रहकर विद्यार्थियों के व्यवहार और व्यक्तित्व का स्वाभाविक अंग बन सकती है।

निष्कर्ष

संत कबीर दास का काव्य भारतीय समाज की नैतिक चेतना का अमूल्य दस्तावेज है। उनकी वाणी में व्यक्त सत्य, समता, प्रेम, करुणा, श्रम, विनम्रता, आत्मनिरीक्षण तथा धार्मिक सहिष्णुता जैसे मूल्य किसी एक काल या समुदाय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सार्वभौमिक और सार्वकालिक हैं। यही कारण है कि लगभग छह शताब्दियों के बाद भी उनका साहित्य समान रूप से प्रासंगिक बना हुआ है।

मूल्य-शिक्षा का मूल उद्देश्य ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना है जो ज्ञानवान होने के साथ-साथ संवेदनशील, उत्तरदायी, नैतिक तथा लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हो। कबीर का काव्य इस उद्देश्य की पूर्ति में अत्यंत प्रभावी भूमिका निभा सकता है क्योंकि उसमें जीवन और व्यवहार के स्तर पर मूल्यों की स्थापना का स्पष्ट आग्रह दिखाई देता है।

वर्तमान समय में जब समाज अनेक प्रकार के नैतिक और सामाजिक संकटों से जूझ रहा है, तब कबीर का संदेश केवल साहित्यिक विरासत नहीं, बल्कि सामाजिक पुनर्निर्माण का भी आधार बन सकता है। शिक्षा यदि कबीर के जीवन-मूल्यों को व्यवहारिक रूप में आत्मसात करने का प्रयास करें, तो आने वाली पीढ़ी अधिक मानवीय, विवेकशील और उत्तरदायी समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

अतः यह कहा जा सकता है कि संत कबीर दास का काव्य मूल्य-शिक्षा की दृष्टि से भारतीय ज्ञान-परंपरा की ऐसी अमूल्य निधि है, जिसकी प्रासंगिकता भविष्य में भी बनी रहेगी।

संदर्भ (References)

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. (2019). कबीर. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
2. शुक्ल, रामचन्द्र. (2020). हिन्दी साहित्य का इतिहास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
3. श्यामसुन्दर दास (सं.). (विभिन्न संस्करण). कबीर ग्रंथावली. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।
4. वर्मा, रामकुमार. संत कबीर. इलाहाबाद: हिन्दी भवन।
5. सिंह, परशुराम चतुर्वेदी. कबीर साहित्य की परख. प्रयागराज: हिन्दी साहित्य सम्मेलन।
6. बीजक (विभिन्न प्रमाणित संस्करण), कबीर पंथी परंपरा।
7. National Education Policy (NEP). (2020). Ministry of Education, Government of India.
8. NCERT. (2005). *National Curriculum Framework*. New Delhi: NCERT.
9. UNESCO. (1996). *Learning: The Treasure Within* (Delors Report). Paris: UNESCO.
10. UNESCO. (2015). *Rethinking Education: Towards a Global Common Good?* Paris: UNESCO.
11. Government of India. *Constitution of India* (Latest Edition).

12. Kohlberg, L. (1984). *Essays on Moral Development*. Harper & Row.
13. Dewey, J. (1916). *Democracy and Education*. New York: Macmillan.
14. Noddings, N. (2002). *Educating Moral People*. Teachers College Press.
15. Gandhi, M. K. *Hind Swaraj* (विभिन्न संस्करण).
16. Radhakrishnan, S. *The Hindu View of Life*. Oxford University Press.
17. भारतीय ज्ञान परंपरा एवं मूल्य-शिक्षा से संबंधित विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के प्रासंगिक दस्तावेज।
18. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. मूल्य-आधारित शिक्षा एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली से संबंधित आधिकारिक प्रकाशन।

